महर्षि अरविंद घोष के शैक्षिक विचारों का वर्तमान शिक्षा प्रणाली में योगदानः एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

अनिता शर्मा
शोधार्थी,
शिक्षा संकाय,
लॉर्ड्स विश्वविद्यालय, अलवर
anitavashishtha2008@gmail.com

डॉ. पंकज शर्मा
शोध निर्देशक,
शिक्षा संकाय,
लॉर्ड्स विश्वविद्यालय, अलवर

सारांश

महर्षि अरविंद घोष भारतीय दर्शन और शिक्षा के उन महान मनीषियों में से एक हैं, जिन्होंने शिक्षा को केवल जीविकोपार्जन का साधन न मानकर मानव के पूर्ण रूपांतरण का माध्यम माना। उनका 'पूर्ण शिक्षा' का सिद्धांत आधुनिक युग की खंडित और यांत्रिक शिक्षा प्रणाली के लिए एक मार्गदर्शक की भूमिका निभाता है। यह शोध पत्र अरविंद घोष के शैक्षिक दर्शन के मूल सिद्धांतों, उनकी शिक्षण विधियों और वर्तमान समय में, विशेषकर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में, उनकी प्रासंगिकता का विश्लेषण करता है।

मुख्य शब्दः *भारतीय दर्शन, पूर्ण शिक्षा', यांत्रिक शिक्षा प्रणाली, शैक्षिक दर्शन, शिक्षण विधियां, प्रासंगिकता ।*

प्रस्तावना

महर्षि अरविंद घोष (1872–1950) एक क्रांतिकारी, दार्शनिक, योगी और शिक्षाविद् थे। उनके अनुसार, शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य मानव की अंतर्निहित शक्तियों का विकास करना और उसे 'अतिमानस' की ओर अग्रसर करना है। अरविंद का मानना था कि शिक्षा का उद्देश्य केवल सूचनाओं का संग्रहण नहीं, बल्कि आत्मा का विकास और चेतना का विस्तार होना चाहिए। वर्तमान समय में, जहाँ शिक्षा बाजारीकरण और अत्यधिक प्रतिस्पर्धी बन गई है, अरविंद का 'पूर्ण शिक्षा' दर्शन विद्यार्थी के शारीरिक, मानसिक, प्राणिक, चौत्य और आध्यात्मिक विकास पर जोर देता है, जो आज की शिक्षा के खोखलेपन को भरने में सक्षम है।

महर्षि अरविंद की शैक्षिक विचारधारा के आधारभूत सिद्धांत अरविंद घोष के शैक्षिक दर्शन की आधारशिला उनके द्वारा प्रतिपादित 'शिक्षा के तीन सिद्धांतों' पर टिकी है। उनका पहला सिद्धांत कहता है कि ''बालक को कुछ भी पढ़ाया नहीं जा सकता''। इसका अर्थ है कि शिक्षक का कार्य केवल ज्ञान थोपना नहीं, बल्कि

बालक के भीतर छिपे ज्ञान को प्रकट करने में सहायक होना है। दूसरा सिद्धांत है कि ''मन को उसके विकास में परामर्श देना चाहिए,'' अर्थात बालक की स्वाभाविक रुचि और प्रकृति के अनुसार ही उसे शिक्षा देनी चाहिए। तीसरा सिद्धांत ''निकट से दूर की ओर'' बढ़ने का है, जो यह स्पष्ट करता है कि शिक्षा बालक के परिवेश और उसकी विरासत से शुरू होकर वैश्विक चेतना तक पहुँचनी चाहिए।

साहित्य समीक्षा

अमवाल, पावक और जौरा (2022) ने वर्तमान सामाजिक-तकनीकी परिवर्तनों के संदर्भ में अरविंद के शैक्षिक मॉडल का अध्ययन किया, जिसमें उन्होंने बताया कि यह मॉडल विश्वव्यापी परिवर्तन, मनोवैज्ञानिक ढाँचा और सांस्कृतिक निर्माण पर कैसे प्रभाव डालता है। इस प्रकार यह शैक्षणिक ढाँचा मानवीय मूल्य को पुनःस्थापित करने का एक कारगर साधन बन जाता है।

सुरेशचन्द्र त्यागी की ' महर्षि अरविन्द –शोध संदर्भ, विद्यावती कोकिल की प्रसाद और श्री अरविन्द नारायण स्वरूप शर्मा (सुमित्र) की 'महर्षि अरविन्द' श्री निवास आयंगर की महर्षि अरविन्द – भावी संतति की दृष्टि में ए०की० पुराणी की श्री अरविन्द की शिक्षा माहेश्वरी की, श्री अरविन्द साहित्य में कृष्ण, अभय देव की श्री अरविन्द और आर्यसमाज, अविनाशचन्द्र भट्टाचार्य की 'श्री अरविन्द बाबू रामधारी सिंह दिनकर की पुस्तक– क्या श्री अरविन्द अकेले है, ए०बी० पुराणी, श्री अरविन्द और भारतीय सांस्कृतिक पुनर्जागरण, इन्द्रसेन की श्री अरविन्द की साधनाशैली तथा मानव विकास, आदि अनेकानेक ऐसे ग्रन्थ उपलब्ध है जिनको अपने आधार बनाकर ही इस शोध पत्र को पूर्ण करने का प्रयास किया गया है। ये सभी साहित्य ग्रन्थ ही हमारे शोध–पत्र के मूलाधार है।

लाल प्रो. रमन बिहारी, पलोड सुनीता, ''शैक्षिक चिन्तन एवं प्रयोग'', 2018 इस पुस्तक में शैक्षिक चिंतन के संदर्भ में गाँधीजी के साथ–साथ रवीन्द्रनाथ टैगोर, स्वामी विवेकानंद, श्री अरविन्द, गिजु भाई, परमहंस योगानंद, रूसो, पेस्टालॉजी, फ्रोबेल, जॉन डीवी, डॉ.मॉन्टेसरी, बर्टेन्ड रसेल के शैक्षिक चिन्तन को भी वर्णित किया गया है। महात्मा गाँधी के दार्शनिक चिन्तन में सर्वोदय दर्शन की तत्व मीमांसा, ज्ञान एवं तर्क मीमांसा, मूल्य एवं आचार मीमांसा, शिक्षा का संप्रत्यय, शिक्षा के उद्देश्य, पाठ्यचर्या, शिक्षण विधि, अनुशासन, शिक्षक–शिक्षार्थी संबंधो का विस्तृत विवेचन इस पुस्तक में किया गया है।

अध्ययन का उद्देश्य

महर्षि अरविंद घोष के शैक्षिक विचारों का वर्तमान शिक्षा प्रणाली में योगदान पर प्रकाश डालना।

पूर्ण शिक्षा की अवधारणा

अरविंद घोष द्वारा प्रस्तावित 'पूर्ण शिक्षा' का विचार मानव व्यक्तित्व के पाँच प्रमुख पहलुओं के विकास पर केंद्रित हैः शरीर, प्राण, मन, चौत्य और आत्मा। उन्होंने शारीरिक शिक्षा को 'सुगठित शरीर' के लिए अनिवार्य माना, ताकि वह दिव्य चेतना का आधार बन सके। प्राणिक शिक्षा के माध्यम से संवेगों और इच्छाओं के शुद्धिकरण पर बल दिया गया। मानसिक शिक्षा को तर्क, स्मृति और एकाग्रता के विकास के रूप में देखा गया। अरविंद का मानना था कि जब तक शिक्षा में 'औचित्य' और आध्यात्मिक आयाम नहीं जुड़ेंगे, तब तक मनुष्य का सर्वांगीण विकास संभव नहीं है। यही कारण है कि उनकी शिक्षा पद्धति में योग और ध्यान का विशेष स्थान है।

वर्तमान शिक्षा प्रणाली में अरविंद के विचारों का योगदान

वर्तमान भारतीय शिक्षा प्रणाली, विशेष रूप से 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020', महर्षि अरविंद के विचारों से गहराई से प्रभावित दिखती है। वर्तमान में जो 'सर्वांगीण विकास' की चर्चा की जा रही है, वह अरविंद के पूर्ण शिक्षा सिद्धांत का ही प्रतिबिंब है। उनकी विचारधारा ने आधुनिक शिक्षा को विद्यार्थी–केंद्रित बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। आज की शिक्षण विधियों में 'स्व–अधिगम' और 'क्रिया–आधारित शिक्षा' को प्राथमिकता दी जा रही है, जिसका समर्थन महर्षि अरविंद ने दशकों पहले किया था। उन्होंने कहा था कि बालक के मस्तिष्क को एक 'भंडार गृह' नहीं, बल्कि 'कार्यशाला' बनाना चाहिए।

शिक्षक की भूमिका और वर्तमान प्रासंगिकता

अरविंद घोष के अनुसार, शिक्षक कोई प्रशिक्षक या स्वामी नहीं है, बल्कि वह एक पथ–प्रदर्शक और सुगमकर्ता है। वर्तमान 'डिजिटल युग' में जहाँ जानकारी इंटरनेट पर उपलब्ध है, शिक्षक की भूमिका केवल सूचना देने तक सीमित नहीं रह गई है। आज शिक्षक की वही भूमिका प्रासंगिक हो गई है जिसकी कल्पना अरविंद ने की थी। एक ऐसा मार्गदर्शक जो छात्र की सोई हुई क्षमताओं को जागृत करे। उनका मानना था

कि शिक्षक को बालक की आत्मा का सम्मान करना चाहिए और उस पर जबरन कोई विचार नहीं थोपना चाहिए। यह दृष्टिकोण आज के मनोवैज्ञानिक शिक्षण विधियों का आधार है।

नैतिक और आध्यात्मिक शिक्षा की आवश्यकता

आज के दौर में बढ़ती अनैतिकता और तनावपूर्ण जीवनशैली के बीच अरविंद घोष के आध्यात्मिक शिक्षा के विचार अत्यंत प्रासंगिक हैं। उन्होंने शिक्षा को केवल बौद्धिक व्यायाम न मानकर चरित्र निर्माण का साधन माना। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में 'मूल्य–परक शिक्षा' को शामिल करने का जो प्रयास हो रहा है, वह अरविंद के दर्शन के बिना अधूरा है। उन्होंने चित्त की शुद्धि और अंतःकरण के विकास पर जो जोर दिया, वह आज के विद्यार्थियों को डिप्रेशन, चिंता और नकारात्मकता से बचाने में एक सुरक्षा कवच की तरह कार्य कर सकता है।

निष्कर्ष

यह कहा जा सकता है कि महर्षि अरविंद घोष का शैक्षिक दर्शन बीते हुए कल की बात नहीं, बल्कि आने वाले भविष्य का आधार है। उनका 'पूर्ण शिक्षा' का विचार मनुष्य को एक मशीन से ऊपर उठाकर एक दैवीय इकाई के रूप में स्थापित करता है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में यदि वैज्ञानिक प्रगति के साथ अरविंद के आध्यात्मिक और चौत्य विकास के सिद्धांतों को आत्मसात कर लिया जाए, तो एक ऐसी पीढ़ी का निर्माण संभव है जो न केवल तकनीकी रूप से दक्ष होगी, बल्कि मानसिक रूप से शांत और मानवीय संवेदनाओं से ओतप्रोत होगी। अरविंद के विचार आज की शिक्षा को नैराश्य से निकालकर पूर्णता की ओर ले जाने का सामर्थ्य रखते हैं।

संदर्भ

- *घोष, अरविंद (1956), ऑन एजुकेशन, श्री अरविंद आश्रम, पांडिचेरी।*
- *शर्मा, आर.एन. (2002), भारतीय शिक्षा दर्शन, राजकमल प्रकाशन।*
- *नीमा, जे.पी. (2010), महर्षि अरविंद का शिक्षा दर्शन, सामयिक प्रकाशन।*
- *राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020), शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार।*